फोटो– विनोद उप्रेती

कठिन समय में रास्तों की तलाश

– किशोर सिंह सजवाण

इस वर्ष कोरोना की दूसरी लहर के दौरान अन्यों की तरह मेरे लिए भी यह कठिन दौर भावनात्मक रूप से अस्थिरता का था। लगभग डेढ़–दो माह की यह कालावधि एक ओर रोज जीवन की क्षण भंगुरता और नश्वरता का अहसास करवाती वहीं दूसरी और इन विकट स्थितियों में कुछ लोगों/समूहों के मानवता के लिए किए जा रहे काम उत्साहवर्धन करते, आशा का संचरण करते और कुछ नया करने को प्रेरित करते।

वैश्विक महामारी कोविड –19 से गत वर्ष से विद्यालय तो बंद हैं ही अध्ययन–अध्यापन का कार्य भी सीधे तौर पर प्रभावित हुआ है। पारंपरिक तरीकों से शिक्षण कार्य जारी रखना अपने आप में चुनौती बनी हुई है। कुछ महीनों पूर्व की बात करें तो किसी अन्य वैकल्पिक शिक्षण के खास माध्यमों की भी कोई विशेष जानकारी नहीं थी।

इस वर्ष कोरोना की दूसरी लहर के दौरान अन्यों की तरह मेरे लिए भी यह कठिन दौर भावनात्मक रूप से अस्थिरता का था। लगभग डेढ़–दो माह की यह कालावधि एक ओर रोज जीवन की क्षण भंगुरता और नश्वरता का अहसास करवाती वहीं दूसरी और इन विकट स्थितियों में कुछ लोगों/समूहों के मानवता के लिए किए जा रहे काम उत्साहवर्धन करते, आशा का संचरण करते और कुछ नया करने को प्रेरित करते।

इस क्रम में शिक्षण हेतु विभागीय प्रयासों और पहलों का हिस्सा तो बना ही छात्र–छात्राओं के साथ व्यक्तिगत रूप से समानान्तर प्रयास जारी रखने का निश्चय भी किया। विभागीय स्तर पर स्वयंप्रभा टीवी चौनेल और से पीएमई विद्या चैनल से शिक्षण सुनिश्चित किया। विभागीय उपक्रम के तहत छात्र–छात्राओं के समूहों का निर्माण, अपने विषय से संबंधी गृह कार्य देने के साथ वर्कशीट वितरण भी सुनिश्चित किया।

व्यक्तिगत स्तर पर कार्यों को देखूं तो शिक्षण योजना निरुपित की और कोरोना गाइड लाइंस और प्रोटोकाल का पालन करते हुए विद्यालय के सेवित क्षेत्र के बच्चों के घर–घर जाकर व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क किया। इस दौरान माता–पिता और अभिभावकों से भी विस्तृत बात करने का अवसर मिला। इस प्रक्रिया में उन बच्चों को भी

सूचीबद्ध किया जिनके पास स्मार्ट फोन उपलब्ध हैं अथवा नहीं। जानकारी संकलित होने पर परस्पर बच्चों के समूह इस तरह से बनाए कि वे बच्चे जिनके पास फोन नहीं थे वे उन बच्चों के साथ मिलकर अध्ययन कर पाएं, जिनके पास स्मार्ट फ़ोन उपलब्ध हैं। इस प्रक्रिया में अभिभावकों को भी विश्वास में लिया गया। इस क्रम को आगे बढ़ाते हुए बच्चों के फोन पर WEBEX एप डाउनलोड करवाया और अभिभावकों की सहमति से सुबह 7:30 बजे का समय निर्धारित किया। इसके अतिरिक्त संवाद में निरन्तरता की दृष्टि से सप्ताह में एक दिन 5 मिनट अभिभावकों से भी बातचीत का क्रम सुनिश्चित किया।

इस दौरान काफी सारी चुनौतियां भी आईं। सभी बच्चों के पास स्मार्टफोन का न हो पाना और फलतः फ़ोन रखने वाले अन्य बच्चों पर ऑनलाइन शिक्षण हेतु उनकी निर्भरता की चुनौती थी।

कई बार माता–पिता/अभिभावकों का काम पर जाते हुए फोन साथ ले जाना। कई परिवारों की आर्थिक स्थिति का ठीक न होना। नेटवर्क की गुणवत्ता। तमाम प्रयासों के बावजूद छात्र–छात्राओं की शत–प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित करने में सफलता नहीं मिली।

लेकिन काम तो करना ही था बावजूद तमाम चुनौतियां के हमने चुनौतियों से निपटने के लिए कुछ कार्य किये–

बच्चों के लिए व्हाट्सएप ग्रुप का निर्माण और अभिभावकों से लगातार सम्पर्क।

आर्थिक रूप से कमजोर चिन्हित परिवारों को ड्राई राशन किट उपलब्ध करवाए। जरूरतमंद बच्चों के लिए समय पर नेट पैक की सुविधा सुनिश्चित की।

शिक्षण हेतु प्रयुक्त गतिविधियां

शिक्षण को रोचक व सुगम बनाने के लिए निम्न उपाय किए–

- Webex एप से शिक्षण कार्य. बच्चों को भी इस एप का इस्तेमाल रोचक और सरल लगा।
- Textmoz एप के माध्यम से साप्ताहिक/मासिक ऑनलाइन टेस्ट का आयोजन
- Pixellab एप में सुन्दर रंगीन व चित्रों का सहारा लेकर छोटी–छोटी कहानियां, कविताएं बनाकर पढ़ाया।
- टेस्ट में लाये अंकों को ग्रुप में साझा किया।
- तीनों कक्षाओं को एक साथ पढ़ाने के कारण, तीनों के अनुकूल विषय सामग्री का यथा समय निर्माण।
- माता–पिता/और अभिभावकों को अद्यतन रखने के लिए लिए सप्ताह में छात्रों की उपस्थिति की ग्रुप में शेयरिंग।

इसके अतिरिक्त जो कुछ नए अनुभव हुए, उन्हें निम्नवत कहा जा सकता है।

- तकनीक का प्रयोग प्रारम्भ में खुद के लिए भी आसान नहीं था। अतः घर में अपने बच्चों की सहायता ऑनलाइन शिक्षण हेतु आवश्यक दक्षताएं विकसित कीं।
- इस दौरान अपने से अधिक छात्र–छात्राओं की सक्रियता सुकून देने वाली रही।
- बच्चों के सुबह 7 बजे से ही मैसेज व फोन करना करने से अहसास हुआ कि वे भी शिक्षण में रुचि ले रहे हैं।
- माता–पिता की उपस्थिति में बच्चों को सही उत्तर देते देख कर माता–पिता का खुश होना वास्तव में अच्छा लगता। इसके अतिरिक्त यह भी लगा कि इस दौरान अभिभावकों से भी समीपता बढ़ी है और परस्पर सम्बन्ध और मजबूत हुए।
- बच्चों का मनोबल बनाए रखने के लिए बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्र–छात्रों को पुरस्कार/सम्मान प्रदान किए।
- बच्चों में भी पहले की अपेक्षा खुलापन देखने को मिला। नेट पैक खत्म होने की स्थित में वे निसंकोच फ़ोन करते।

व्यक्तिगत संपर्क और संवाद का परिणाम यह भी रहा कि कई अभिभावकों की वास्तविक स्थिति के बारे में पता चला। फलतः विकासखण्ड के कुछ शिक्षक साथियों की आर्थिक सहायता से 78 परिवारों को ड्राइ राशन किट उपलब्ध करवाये। इसमें से अपने सेवित क्षेत्र के में 29 परिवार भी शामिल हैं।

हालांकि ये कुछ प्रयास थे जो पर्याप्त तो नहीं थे लेकिन इन प्रयासों के जरिये बच्चे और उनके परिवार से जुड़े रहने का अवसर जरूर मिलता रहा।

(लेखक राजकीय आदर्श उच्च प्राथमिक विद्यालय मंगसू, कीर्तिनगर, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड में अध्यापक हैं)